बी० ए० भाग-3
हिन्दी प्रतिष्ठा
पेपर-7
'प्राचीन भारतीय आर्य भाषा'

रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग
डी० के० कालेज
डुमरांव

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा :-

(1500 ई० पू० से 500 ई० पू०)

भारतीय आर्य भाषा - समूह का प्राचीन रूप ऋग्वेद में देखने को मिलता है। ऋग्वेद का समय अनिश्चित है। ऋग्वेद के मन्त्रों को देखने से स्पष्टतः ज्ञात होता है कि उसकी रचना न एक समय में हुई है और न एक स्थान में। वह कई शताब्दियों और कई स्थानों की रचना है जैसा उसमें विद्यमान भाषा - भेद से जाना जाता है। यह भाषा - भेद देश और काल के भेद के कारण है। ऋग्वेद के दस मंडलों में प्रथम और दशम मंडल बाद की रचना माने जाते हैं।

वैदिक साहित्य के अन्तर्गत संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् - इन चार की गणना होती है। संहिता से उपनिषद् तक का विकास भाव - धारा की दृष्टि से ही नहीं, भाषा की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। यह अन्तर शताब्दीयों में ही सम्भव हुआ होगा। उदाहरणार्थ, निम्नलिखित उदाहरणों की तुलना रोचक होगी -

उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम् ।
नमो भरन्त एमसि ॥

- ऋग्वेद

हे अग्नि! हम प्रतिदिन प्रातः - सायं बुद्धि - पूर्वक प्रणाम करते हुए तुम्हारे पास आते हैं।

यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह।
आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन ॥
- तैत्तिरीयोपनिषद: नवम अनुवाक

जहाँ से मन के साथ वाणी उसे न पाकर लौट आती है, उस ब्रह्म के आनन्द को जाननेवाला किसी से भयभीत नहीं होता।

पहला उद्धरण ऋग्वेद का है और दूसरा तैत्तिरीयोपनिषद् का। ऋग्वेद के उद्धरण की भाषिक प्राचीनता बिना कहे भी स्पष्ट है। ऋग्वेद को छन्दस् भी कहा गया है, क्योंकि उसकी रचना छन्दोबद्ध है। वेदों की तुलना में ब्राह्मण-ग्रन्थों की महत्ता कई दृष्टियों से है जिनमें एक यह भी है कि ब्राह्मण-ग्रन्थ मुख्यत: गद्य में हैं, इसलिए उनसे वाक्य-रचना की प्रणाली को जानने में सहायता मिलती है। वह सुविधा छन्द में सम्भव नहीं, क्योंकि उसमें छन्द के अनुरोध से शब्दों का क्रम परिवर्तित हो जाया करता है।

विद्वानों की धारणा है कि जिस भाषा में ऋग्वेद की रचना हुई है, वह बोल-चाल की भाषा न होकर उस समय की परिनिष्ठित, साहित्यिक भाषा थी। उसके समानान्तर लोक-भाषा भी रही होगी, किन्तु लिखित साहित्य के अभाव में उसे जानने का आज कोई साधन नहीं है।

वैदिक भाषा से ही संस्कृत का विकास हुआ है। यों, एक मत यह भी है कि संस्कृत का विकास वैदिक के बदले तत्युगीन किसी बोली से हुआ है जो अनेक कारणों से महत्वपूर्ण बन गयी। संस्कृत की स्थिति को समझने के लिए हम खड़ी-बोली का उदाहरण ले सकते हैं। खड़ी-बोली मेरठ के आस-पास के कुछ जिलों की बोली है, किन्तु राजनीतिक, आर्थिक, व्यापारिक आदि कारणों से वह अन्य बोलियों की तुलना में आगे निकल गयी और आज सम्पूर्ण भारत की राष्ट्रभाषा बन गयी है। खड़ी-बोली के राष्ट्रभाषा या साहित्यिक भाषा होने का यह अर्थ नहीं कि आज दूसरी बोलियाँ या भाषाएँ है ही नहीं। बोलियाँ तो अनेक हैं, किन्तु जो महत्ता खड़ी-बोली को मिली है वह अन्यों को नहीं। इसी तरह संस्कृत भी समसामयिक इतर भाषाओं की तुलना में आगे निकल गयी और भारत की सांस्कृतिक भाषा बन गयी, किन्तु जो भाषाएँ उस समय जन-साधारण में प्रचलित रही होंगी, उनका विकास अवरुद्ध नहीं हुआ होगा। उनसे भारत की अनेक वर्तमान भाषाओं का विकास मानना असंगत न होगा।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट-प्रोफेसर
हिन्दी-विभाग
डी. के. कालेज डुमरॉव
बक्सर बिहार